भारतीय दर्शन–''समस्त ज्ञान बोध की आधारिक कसौट

नीतू नौटियाल*

संक्षिप्त सारांश

भारतीय दर्शन प्राचीन काल से ही ज्ञान को आधार प्रदान कर समस्त विश्वमण्डल में अपने ज्ञान के दार्शनिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर रहा है। आज भी ज्ञान की समस्त शाखा के स्रोत के रूप में भारतीय दर्शन का स्थान सर्वोपरी है। दर्शनशास्त्र सबसे प्राचीनत्म विषय के रूप में इस सृष्टि से सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रश्न, चाहे वो सृष्टि के कर्ता से सम्बन्धित हो चाहे अन्तिम सत्य से सम्बन्धित हो या ज्ञान के स्वरूप तथा साधन से सम्बन्धित हो, के उत्तर के रूप में उसकी व्याख्या करता है। भारतीय दर्शन अनुभूत ज्ञान पर आधारित है और तर्क द्वारा पोषित है। अधिकतर भारतीय दर्शन वास्तविक ज्ञान के स्वरूप की व्याख्या करने की ओर प्रवृत्त है। भारत में आज भी किसी भी दर्शन में किसी भी ज्ञान–विज्ञान अथवा क्रिया की व्याख्या सामान्यतः उसकी तत्व मीमांसा के आधार पर की जाती है, जबकि पाश्चात्य देशों में आज भी किसी भी ज्ञान–विज्ञान अथवा क्रिया की व्याख्या सामान्यतः सीधे मानव जीवन के आधार पर की जाती है। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत वेद उपनिषद, कुरान, गीता, चार्वाक दर्शन, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, वैशेशिक दर्शन, सांख्य दर्शन, मिमांसा दर्शन, वेदान्त दर्शन इत्यादि सभी आते हैं। भारतीय दर्शन के मुख्य रूप से दो शाखा या सम्प्रदाय हैं प्रथम आस्तिक तथा द्वितीय नास्तिक है। आस्तिक सम्प्रदाय वेदों के प्रमाण को मानता है तथा नास्तिक सम्प्रदाय वेदों के प्रमाण को नहीं मानता है।

विभिन्न भारतीय दर्शनों में ज्ञान के दो प्रकार बताये गये हैं– (1) भौतिक ज्ञान (2) आध्यात्मिक ज्ञान। भौतिक ज्ञान भौतिक संसार से सम्बन्धित है तथा आध्यात्मिक ज्ञान ईश्वर से सम्बन्धित है। ब्रह्म का ज्ञान देने वाला ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान या शिक्षा है, जो कि वास्तविक ज्ञान है। इस सिद्धान्त पर सभी भारतीय दर्शन एकमत है कि दुःख और बन्धनों का कारण मानव का अज्ञान है। यह अज्ञान केवल बौद्धिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक भी है। बुद्ध के चार आर्य सत्य और शंकर का अद्वैत वेदान्त इसी अज्ञानता को दूर करने की चेष्टा करते हैं। यह अज्ञान संसार का स्वभाव है। संसार के दुःखों से छुटकारा पाने के लिये इस अज्ञान से मुक्ति आवश्यक है। अतः भारतीय दर्शन अज्ञानता रूपी अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान रूपी प्रकाश से समस्त मानव जाति को उचित दिशा प्रदान करता है।

इस भौतिकवादी युग में सामान्यतः भौतिक ज्ञान को ही वास्तविक ज्ञान के रूप में समझा जाता है, परन्तु वास्तविक ज्ञान का आधार हमारे भारतीय दर्शन में व्याप्त रूप से विद्यमान है। आज ज्ञान के विषय के रूप में जो यह नकारात्मक अवधारणा है, वह व्यक्ति को मनुष्यत्व से पशुतत्व की ओर ले जा रही है, जो आज समस्त विश्व के लिये एक चिन्ता का विषय होता जा रहा है। भारतीय दर्शन या भारतीय दर्शन शास्त्र एक उपेक्षित विषय के रूप में देखा जाता है। छात्रों को केवल भौतिक ज्ञान प्राप्त करने के विषयों में रूचि होती है, क्योंकि यह विषय उनको भौतिक सुख प्राप्त कराता है। आज हमें आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के समस्त लोग तथा छात्र भारतीय दर्शन के ज्ञान से परिचित तथा आलोकित हो जायं, जिसके द्वारा मानव में जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होगा व वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर सकेगा।

ज्ञान की समस्त शाखा के स्रोत के रूप में भारतीय दर्शन का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय दर्शन प्राचीन काल से ही ज्ञान को आधार प्रदान कर समस्त दृष्टिकोण को प्रस्तुत

* सहायक प्रोफेसर, श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कालेज, देहरादून

कर रहा है। आज जितने भी विषय हैं उनका जन्म दर्शन शास्त्र से ही हुआ है। सबसे प्राचीनतम् विषय के रूप में इस सृष्टि से सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रश्न हमें दर्शन शास्त्र के विषय के रूप में मिलते हैं। उदाहरण विश्व क्या है? इसका जन्म कैसे हुआ है?, ईश्वर है या नहीं?, अगर है तो उसका स्वरूप कैसा है?, ईश्वर के अस्तित्व का सबूत क्या है?, अन्तिम सत्य अथवा परम् सत्ता क्या है? ज्ञान का स्वरूप क्या है और उनके साधन कौन–कौन से है? इत्यादि कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके समाधान की खोज दर्शन शास्त्र के विषय के रूप में भी स्थापित करते हैं। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत भारत वर्ष के समस्त दर्शन रखे जाते हैं, चाहे वह हिन्दु दर्शन हो या अहिन्दु दर्शन। समस्त प्राचीन भारतीय और आधुनिक भारतीय विचारधारायें भारतीय दर्शन के अन्तर्गत आती है। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत वेद, उपनिशद्, कुरान, गीता, चर्वाक दर्शन, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य दर्शन, मिमांसा दर्शन, वेदान्त दर्शन इत्यादि सभी आते हैं।

भारतीय दर्शन की मुख्य रूप में दो शाखायें है :– (1) आस्तिक, (2) नास्तिक

भारतीय दर्शन की आस्तिक तथा नास्तिक शाखओं को निम्नलिखित तालिका से भलि–भांति समझा जा सकता हैः–

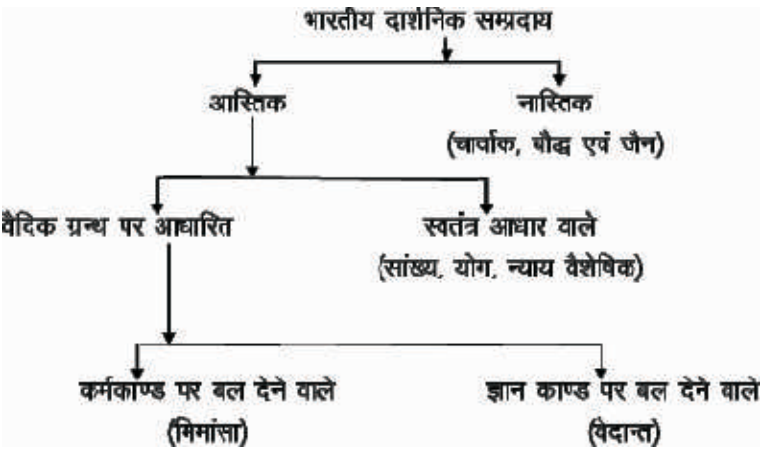

आस्तिक सम्प्रदाय वेदों के प्रमाण को मानता है तथा नास्तिक सम्प्रदाय वेदों के प्रमाण को नहीं मानता है।

भारतीय दर्शन अनुभूत ज्ञान पर आधारित है और तर्क द्वारा पोषित है। अधिकतर भारतीय दर्शन वास्तविक ज्ञान के स्वरूप की व्याख्या करने की ओर प्रवृत्त है।

चार्वक दर्शन का कहना है कि केवल प्रत्यक्ष के द्वारा हम दुनिया में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक वस्तु, जिनका ज्ञान हमें प्रत्यक्ष के द्वारा नहीं होता है, वास्तविक नहीं है। प्रत्यक्ष ज्ञान में तीन बातें आवश्यक रूप से पायी जाती हैंः (1)– इन्द्रिय (Organs), (2)– पदार्थ (Object), (3)– उस पदार्थ के साथ इन्द्रियों का सम्पर्क या सन्निकर्ष (Contact)। इन तीनों के मेल से ही प्रत्यक्ष (Perception) का निर्माण होता है। अतः चार्वक दर्शन ने भौतिक ज्ञान को विशेष महत्व दिया है। सभी भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय में चर्वाक दर्शन को

छोड़कर सभी दर्शन ''आत्मा'' या ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और वास्तविक ज्ञान या सत्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में आध्यात्मिकता को महत्व देते हैं। वेद शब्द का अर्थ ही 'ज्ञान' है और इसके दो पहलू हैं–

(1)– मंत्र या ईश्वर–

स्तुति या सहितायें जैसे चार वेद (i) ऋगवेद, (ii) यजुर्वेद, (iii) सामवेद, (iv) अथर्वेद

(2)– ब्राह्मण या प्रार्थनाओं के गद्य पाठ

दार्शनिक चिन्तन का आरम्भ ब्राह्मणों के साथ संलग्न भाग 'अरण्यक' से होता है। 'अरण्यक' के अन्तिम भाग को उपनिषद् कहते हैं। दर्शन का सार ही उपनिषद् है। उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ही ज्ञान है, ब्रह्म अन्नत है, ब्रह्म शाश्वत, सर्वशक्तिमान और शुद्ध चेतना है। ब्रह्म को इन्द्रियों या बुद्धि द्वारा नहीं जाना जा सकता है, ब्रह्म तो केवल एकाग्रता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

श्री भगवद् गीता के अनुसार ज्ञान की धारणा यह है कि ज्ञान प्राप्ति की श्रेष्ठता मनुष्य एवं संसार की एकता पहचानने में है। श्री भगवद् गीता में ज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया गया है ''शुद्ध ज्ञान केवल वह है जिसके माध्यम से हम सभी जीवों को एक ही भाव रहित अभिवृत्ति से देखते हैं और जिसमें विविधता में एकता देखी जा सकती हैं।''

बौद्ध धर्म अज्ञानता को दुःखों का मूल कारण मानता है। दुःखों को दूर करने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। अज्ञानता बन्धन है और ज्ञान मुक्ति है। जैन दर्शन ने भी ज्ञान को मुक्ति की क्रिया बताया है। जैन दर्शन के अनुसार ज्ञान के दो प्रकार हैंः– (1)– प्रमाण, (2)– नय।

'प्रमाण' का अर्थ है किसी पदार्थ को उसी रूप में जानना जिसमें वह वास्तविक रूप में है। ज्ञाता के किसी विशेष संदर्भ या सम्बन्ध में किसी पदार्थ के ज्ञान को 'नय' कहते हैं।

न्याय दर्शन में ज्ञान को पदार्थों की अभिव्यक्ति माना जाता है। न्याय दर्शन में भी ज्ञान के दो भेद हैंः– (1)– प्रामाणिक ज्ञान, जो निश्चित ज्ञान या यथार्थ ज्ञान है, (2)– अप्रामाणिक ज्ञान– जो बोध, अनुमान, तुलना और प्रमाण के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से उत्पन्न ज्ञान है, को कहते हैं।

मिमांसा दर्शन ने बताया है कि प्रामाणिक ज्ञान वह है जिससे अज्ञात तत्व के अर्थ का ज्ञान प्राप्त होता है।

इस प्रकार विभिन्न भारतीय दर्शनों के द्वारा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के दो प्रकार हैं भौतिक ज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान, जो ईश्वर से सम्बन्धित है। ब्रह्म का ज्ञान देने वाला ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान या शिक्षा है, जो वास्तविक ज्ञान है। इस सिद्धान्त पर सभी भारतीय दर्शन एकमत हैं कि दुःख और बन्धनों का कारण मानव का अज्ञान है। यह अज्ञान केवल बौद्धिक ही नहीं अपितु आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक भी है। बुद्ध के चार आर्य सत्य और शंकर का अद्वैत वेदान्त इसी अज्ञानता को दूर करने की चेष्टा करते हैं। यह अज्ञान संसार का स्वभाव है। अतः संसार के दुःखों से छुटकारा पाने के लिये इस अज्ञान से मुक्ति आवश्यक है। अतः

भारतीय दर्शन अज्ञानता रूपी अन्धकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान रूपी प्रकाश से समस्त मानव जाती को एक उचित दिशा प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारत के प्रमुख शिक्षा–दर्शन, आर०के० चौब– आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर (2004)
2. भारतीय दर्शन– सिंह एवं सिंह ज्ञान–ज्ञानदा प्रकाशन (पी० एण्ड डी०) नई दिल्ली (2004)
3. भारतीय दर्शन– डॉ० राधाकृष्णन– राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली (2004)
4. भारतीय दर्शन के मूल तत्व– डॉ० रामनाथ शर्मा– केदारनाथ रामनाथ, मेरठ
5. शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग– रमन बिहारी लाल, सुनिता पलोड– विनय रखेजा, द्वारा आर०लाल० बुक डिपो (2012)
6. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक– डॉ० जे०एस० वालिया– अहम् पाल पब्लिशर्स, पंजाब (2012)